Faizane Khwaja Gharib Navaaz (Hindi)

رَحْمَةُ اللّٰهِ
تَعَالٰی عَلَیْه

फ़ैज़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج۱ص۴۰دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

फ़ैज़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

येह रिसाला (**फ़ैज़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़**)

मजलिस अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : **ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट** (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ैज़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि रहमतुल्लिल आलमीन, शफ़ीउल मुज़्निबीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : لَا تَجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قُبُوْرًا وَلَا تَجْعَلُوْا قَبْرِیْ عِيْدًا, या'नी अपने घरों को क़ब्रिस्तान मत बनाओ और न ही मेरी क़ब्र को ईद बनाओ وَصَلُّوْا عَلَیَّ فَاِنَّ صَلَاتَكُمْ تَبْلُغُنِیْ حَيْثُ كُنْتُمْ या'नी और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ा करो, बेशक तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है चाहे तुम जहां भी हो।[1]

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआतुल मनाजीह में इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : अपने घरों को क़ब्रिस्तान की तरह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ख़ाली मत रखो बल्कि फ़राइज़ मस्जिदों में अदा करो और नवाफ़िल घर में। और जैसे ईदगाह में साल में सिर्फ़ दो बार जाते हैं ऐसे मेरे मज़ार पर न आओ बल्कि अक्सर हाज़िरी दिया करो या जैसे ईद के दिन खेलकूद के लिये मेलों में जाते हैं ऐसे तुम हमारे रौज़े पर बे अदबी से न आया करो बल्कि बा अदब रहा करो।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1... ابو داود، کتاب المناسک، باب زیارۃ القبور، ۲/۳۱۵، حدیث: ۲۰۴۲

2... मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 101

अ़र्सए दराज़ से हिन्द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की तवज्जोह का मर्कज़ रहा है। मुख़्तलिफ़ अदवार में यके बा'द दीगरे बे शुमार औलियाए किबार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने हिन्द का रुख़ किया और लोगों को न सिर्फ़ दीने इस्लाम की दा'वत दी बल्कि कुफ़्रो शिर्क की तारीकियों में भटक्ने वाले अन गिनत ग़ैर मुस्लिमों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वह़दानिय्यत और प्यारे आक़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत से आगाह कर के इन्हें दाइरए इस्लाम में दाख़िल भी फ़रमाया। ताजुल औलिया, सय्यिदुल अस्फ़िया, वारिसुन्नबी, अ़ताए रसूल, सुल्त़ानुल हिन्द, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सय्यिद मुईनुद्दीन ह़सन सन्जरी चिश्ती अजमेरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का शुमार भी इन्ही बुज़ुर्गों में होता है। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه छटी सदी हिजरी में हिन्द तशरीफ़ लाए और एक अ़ज़ीमुश्शान रूह़ानी व समाजी इन्क़िलाब का बाइस बने ह़त्ता कि हिन्द का ज़ालिमो जाबिर हुक्मरान भी आप की शख़्सिय्यत से मरऊब हो कर ताइब हुवा और अ़क़ीदत मन्दों में शामिल हो गया। आइये ! ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़िन्दगी के ह़सीन पहलूओं को मुलाह़ज़ा कीजिये।

विलादते बा सआ़दत

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सय्यिद मुईनुद्दीन ह़सन सन्जरी चिश्ती अजमेरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی 537 हि. ब मुत़ाबिक़ 1142 ई. में सिजिस्तान या सीसतान के अ़लाक़े ''सन्जर'' में पैदा हुए।(1)

1... इक़्तिबासुल अन्वार, स. 345

नाम व सिल्सिलए नसब

आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इस्मे गिरामी ह़सन है और आप नजीबुत्त़रफ़ैन ह़सनी व ह़ुसैनी सय्यिद हैं । आप के अल्क़ाब बहुत ज़ियादा हैं मगर मश्हूरो मा'रूफ़ अल्क़ाब में मुईनुद्दीन, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सुल्त़ानुल हिन्द, वारिसुन्नबी और अ़त़ाए रसूल वग़ैरा शामिल हैं आप का सिल्सिलए नसब सय्यिद मुईनुद्दीन ह़सन बिन सय्यिद ग़ियासुद्दीन ह़सन बिन सय्यिद नज्मुद्दीन बिन सय्यिद अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ है ।(1)

वालिदैने करीमैन

आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिदे माजिद सय्यिद ग़ियासुद्दीन رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जिन का शुमार "सन्जर" के उमरा व रुअसा में होता था इन्तिहाई मुत्तक़ी व परहेज़ गार और साह़िबे करामत बुज़ुर्ग थे । नीज़ आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वालिदए माजिदा भी अक्सर अवक़ात इबादतो रियाज़त में मश्ग़ूल रहने वाली नेक सीरत ख़ातून थीं ।(2) जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पन्दरह साल की उ़म्र को पहुंचे तो वालिदे मोह़तरम का विसाले पुर मलाल हो गया । विरासत में एक बाग़ और एक पनचक्की मिली आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसी को ज़रीअ़ए मआ़श बना लिया और ख़ुद ही बाग़ की निगह्बानी करते और दरख़्तों की आबयारी फ़रमाते ।(3)

1... मुईनुल हिन्द ह़ज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, स. 18, मुलख़्ख़सन वग़ैरा
2... अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 506, ब तग़य्युर
3... मिरआतुल असरार, स. 593, ब तग़य्युर

वलिय्युल्लाह के जूठे की बरकत

एक रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى बाग़ में पौदों को पानी दे रहे थे कि एक मजज़ूब बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम क़न्दौज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बाग़ में तशरीफ़ लाए । जूं ही ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن की नज़र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस मक़्बूल बन्दे पर पड़ी, फ़ौरन दौड़े, सलाम कर के दस्त बोसी की और निहायत अदबो एह़तिराम के साथ दरख़्त के साए में बिठाया । फिर उन की ख़िदमत में इन्तिहाई आ़जिज़ी के साथ ताज़ा अंगूरों का एक ख़ोशा पेश किया और दो ज़ानू बैठ गए । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली को उस नौ जवान बाग़बान का अन्दाज़ भा गया, ख़ुश हो कर खली (तिल या सरसों का फूक) का एक टुकड़ा चबा कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुंह में डाल दिया । खली का टुकड़ा जूं ही ह़ल्क़ से नीचे उतरा, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दिल की कैफ़िय्यत यकदम बदल गई और दिल दुन्या की मह़ब्बत से उचाट हो गया । फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बाग़, पन चक्की और सारा साज़ो सामान बेच कर उस की क़ीमत फ़ुक़रा व मसाकिन में तक़्सीम फ़रमा दी और ह़ुसूले इ़ल्मे दीन की ख़ात़िर राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर बन गए ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा वाक़िए़ से हमें येह दर्स मिलता है कि जब हम किसी मजलिस में बैठे हों और हमारे बुज़ुर्ग,

1... मिरआतुल असरार, स. 593, मुलख़्ख़सन

असातिज़ा, मां बाप, या पीरो मुर्शिद आ जाएं तो हमें उन की ता'ज़ीम के लिये खड़ा हो जाना चाहिये उन्हें इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के साथ बिठाना चाहिये । याद रखिये ! अदब ऐसी शै है कि जिस के ज़रीए इन्सान दुन्यवी व उख़रवी ने'मतें ह़ासिल कर लेता है और जो इस सिफ़त से मह़रूम होता है वोह उन ने'मतों का भी ह़क़दार नहीं होता । शायद इसी लिये कहा जाता है कि "बा अदब बा नसीब बे अदब बे नसीब" यक़ीनन अदब ही इन्सान को मुमताज़ बनाता है, जिस त़रह़ रेत के ज़र्रों में मोती अपनी चमक और अहम्मिय्यत नहीं खोता इसी त़रह़ बा अदब शख़्स भी लोगों में अपनी शनाख़्त को क़ाइमो दाइम रखता है । लिहाज़ा हमें भी अपने बड़ों का अदबो एह़तिराम करने और छोटों के साथ शफ़्क़त व मह़ब्बत से पेश आना चाहिये । आइये ! इस ज़िम्न में 3 अह़ादीसे मुबारका सुनिये और अ़मल का जज़्बा पैदा कीजिये ।

1. दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अनस ! बड़ों का अदबो एह़तिराम और ता'ज़ीमो तौक़ीर करो और छोटों पर शफ़्क़त करो, तुम जन्नत में मेरी रफ़ाक़त पा लोगे ।(1)
2. नूर के पैकर तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने हमारे छोटों पर रह़्म न किया और हमारे बड़ों की ता'ज़ीम न की वोह हम में से नहीं ।(2)

---

1 ... شعب الایمان، باب فی رحم الصغیر، ۷/۴۵۸، حدیث: ۱۰۹۸۱
2 ... ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی رحمة الصبیان، ۳/۳۶۹، حدیث: ۱۹۲۶

3. सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो जवान किसी बूढ़े का उस की उ़म्र की वज्ह से इक्राम करे उस के बदले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी के ज़रीए उस की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई करवाता है।(1)

हुसूले इ़ल्म के लिये सफ़र

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने 15 बरस की उ़म्र में हुसूले इ़ल्म के लिये सफ़र इख़्तियार किया और समर क़न्द में हज़रते सय्यिदुना मौलाना शरफ़ुद्दीन عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِیْن की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर बा क़ाइदा इ़ल्मे दीन का आग़ाज़ किया। पहले पहल कुरआने पाक हिफ़्ज़ किया और बा'द अज़ां उन्ही से दीगर उ़लूम ह़ासिल किये।(2) मगर जैसे जैसे इ़ल्मे दीन सीखते गए ज़ौक़े इ़ल्म बढ़ता गया, चुनान्चे इ़ल्म की प्यास को बुझाने के लिये बुख़ारा का रुख़ किया और शोह्रए आफ़ाक़ आ़लिमे दीन मौलाना हुसामुद्दीन बुख़ारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی के सामने ज़ानूए तलम्मुज़ तह किया और फिर उन्ही की शफ़्क़तों के साए में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने थोड़े ही अ़र्से में तमाम दीनी उ़लूम की तक्मील कर ली। इस त़रह़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मज्मूई त़ौर पर तक़रीबन पांच साल समर क़न्द और बुख़ारा में हुसूले इ़ल्म के लिये क़ियाम फ़रमाया।(3)

1... ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی اجلال الکبیر، ۳/۴۱۱، حدیث: ۲۰۲۹
2... अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 508, मुलख़्ख़सन
3... अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 508, मुलख़्ख़सन

तालिब मतलूब के दर पर

इस अ़र्से में उ़लूमे ज़ाहिरी की तक्मील तो हो चुकी थी मगर जिस तड़प की वज्ह से घरबार को ख़ैरबाद कहा था उस की तस्कीन अभी बाक़ी थी। चुनान्चे किसी ऐसे त़बीबे ह़ाज़िक़ (माहिर) की तलाश में निकल खड़े हुए जो दर्दे दिल की दवा कर सके। चुनान्चे मुर्शिदे कामिल की जुस्तजू में बुख़ारा से ह़िजाज़ का रख़्ते सफ़र बांधा। रास्ते में जब नैशापूर (सूबा ख़ुरासान रज़वी ईरान) के नवाह़ी अ़लाक़े "हारवन" से गुज़र हुवा और मर्दे क़लन्दर क़ुत़्बे वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान हारवनी चिश्ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का शोहरा सुना तो फ़ौरन ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए और उन के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त कर के सिल्सिलए चिश्तिय्या में दाख़िल हो गए।(1)

यक दर गीर मोह़कम गीर

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कई साल तक मुर्शिदे कामिल की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहे और मा'रिफ़त की मनाज़िल तै करते हुए बात़िनी उ़लूम से फ़ैज़याब होते रहे। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی जहां भी तशरीफ़ ले जाते आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه उन का सामान अपने कन्धों पर उठाए साथ जाते नीज़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को कई मर्तबा मुर्शिद के साथ ह़ज की सआ़दत भी ह़ासिल हुई।(2) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : जब मेरे पीरो मुर्शिद ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी

1... मिरआतुल असरार, स. 594, मुलख़्ख़सन
2... अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 509, मुलख़्ख़सन

عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی ने मेरी ख़िदमत और अ़क़ीदत देखी तो ऐसी कमाले ने'मत अ़ता फ़रमाई जिस की कोई इन्तिहा नहीं ।

मुरीद हो तो ऐसा

यक़ीनन जिस त़रह़ हर मुह़िब की चाहत होती है कि मह़बूब की नज़रों में समा जाऊं और शागिर्द की आरज़ू येह होती है कि उस्ताद की आंखों का तारा बन जाऊं इसी त़रह़ एक मुरीद की दिली ख़्वाहिश येह होती है कि मैं अपने पीरो मुर्शिद का मन्ज़ूरे नज़र बन जाऊं मगर ऐसे क़िस्मत के धनी बहुत कम होते हैं जिन की येह तमन्ना पूरी हो जाए। ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन ह़सन चिश्ती अजमेरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی बारगाहे मुर्शिद में इस क़दर मक़्बूल थे कि एक मौक़अ़ पर ख़ुद मुर्शिदे करीम ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی ने फ़रमाया : हमारा मुईनुद्दीन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब है हमें अपने मुरीद पर फ़ख़्र है।[1]

बारगाहे इलाही में मक़्बूलिय्यत

एक बार ह़ज के मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی ने मीज़ाबे रह़मत के नीचे आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ का हाथ पकड़ कर बारगाहे इलाही में दुआ़ की : ऐ मौला ! मेरे मुईनुद्दीन ह़सन को अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमा । ग़ैब से आवाज़ आई : मुईनुद्दीन हमारा दोस्त है, हम ने इसे क़बूल किया ।[2]

1... मिरआतुल असरार, स. 595 2... इक़्तिबासुल अन्वार, स. 349

बारगाहे रिसालत से हिन्द की सुल्तानी

बारगाहे रिसालत में ख़्वाजा मुईनुद्दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمُبِیْن के मर्तबे का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمُبِیْن को मदीने शरीफ़ की ह़ाज़िरी का शरफ़ मिला तो निहायत अदबो एह़तिराम के साथ यूं सलाम अ़र्ज़ किया : "اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدَ الْمُرْسَلِیْن وَخَاتَمَ النَّبِیِّیْن" इस पर रौज़ए अक़्दस से आवाज़ आई : وَعَلَیْکُمُ السَّلَامُ یَا قُطْبَ الْمَشَائِخ[1] नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को हिन्द की सुल्तानी भी बारगाहे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही से अ़त़ा हुई । चुनान्चे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने रिसाले "ख़ौफ़नाक जादूगर" के सफ़ह़ा 2 पर रक़म त़राज़ हैं :

सिल्सिलए आ़लिया चिश्तिय्या के अ़ज़ीम पेश्वा ख़्वाजए ख़्वाजगान, सुल्त़ानुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ह़सन सन्जरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی को मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا की ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर सय्यिदुल मुरसलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से येह बिशारत मिली : "ऐ मुईनुद्दीन ! तू हमारे दीन का मुईन (या'नी दीन का मददगार) है, तुझे हिन्दुस्तान की विलायत अ़त़ा की, अजमेर जा, तेरे वुजूद से बे दीनी दूर होगी और इस्लाम रौनक़ पज़ीर होगा ।"

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1... अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 510, ब तग़य्युर

सुल्तानुल हिन्द का सफ़रे हिन्द

आप رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ इस बिशारत के बा'द हिन्द रवाना हुए और समर क़न्द, बुख़ारा, अ़रूसुल बिलाद बग़दाद शरीफ़, नैशापूर, तबरेज़, औश, अस्फ़हान, सब्ज़वार, ख़ुरासान, ख़िरक़ान, इस्तरआबाद, बल्ख़ और ग़ज़नी वग़ैरा से होते हुए हिन्द के शह्र अजमेर शरीफ़ (सूबा राजस्थान) पहुंचे और इस पूरे सफ़र में आप رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ ने सेंकड़ों **औलियाउल्लाह** और अकाबिरीने उम्मत से मुलाक़ात की । चुनान्चे

हमअ़स्र उ़लमा व औलिया से मुलाक़ात

आप رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ बग़दादे मुअ़ल्ला में ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म मुह़्युद्दीन सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और पांच माह तक बारगाहे ग़ौसिया से इक्तिसाबे फ़ैज़ किया । तबरेज़ में शैख़ बदरुद्दीन अबू सईद तबरेज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی की बारगाह से इ़ल्म की मीरास ह़ासिल की । अस्फ़हान में शैख़ मह़मूद अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی के पास ह़ाज़िर हुए और ख़िरक़ान में शैख़ अबू सईद अबुल ख़ैर और ख़्वाजा अबुल ह़सन ख़िरक़ानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی के मज़ारात पर ह़ाज़िरी दी । इस्तरआबाद में ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ नासिरुद्दीन इस्तरआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْہَادِی से कस्बे फ़ैज़ किया । हरात में शैख़ुल इस्लाम इमाम अ़ब्दुल्लाह अन्सारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی के मज़ार की ज़ियारत की और बल्ख़ में शैख़ अह़मद ख़िज़्रविय्या رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ की ख़ानक़ाह में क़ियाम फ़रमाया ।(1)

1... अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 510, मुलख़्ख़सन

ह़ाकिमे सब्ज़वार की तौबा

सफ़रे हिन्द के दौरान जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का गुज़र अ़लाक़ा सब्ज़वार (सूबा ख़ुरासान रज़वी ईरान) से हुवा तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने वहां एक बाग़ में क़ियाम फ़रमाया जिस के वस्त़ में एक ख़ुशनुमा ह़ौज़ था। येह बाग़ ह़ाकिमे सब्ज़वार का था जो बहुत ही ज़ालिम और बद मज़हब शख़्स था उस का मा'मूल था कि जब भी बाग़ में आता तो शराब पीता और नशे में ख़ूब शोरो ग़ुल मचाता। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ह़ौज़ से वुज़ू किया और नवाफ़िल अदा करने लगे। मुह़ाफ़िज़ों ने अपने ह़ाकिम की सख़्त गीरी का ह़ाल अ़र्ज़ किया और दरख़्वास्त की, कि यहां से तशरीफ़ ले जाएं कहीं ह़ाकिम आप को कोई नुक़्सान न पहुंचा दे। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा ह़ाफ़िज़ो नासिर (निगह्बान व मददगार) है। इसी दौरान ह़ाकिम बाग़ में दाख़िल हुवा और सीधा ह़ौज़ की त़रफ़ आया। अपनी ऐ़शो इ़शरत की जगह पर एक अजनबी दरवेश को देखा तो आग बगूला हो गया और इस से पहले कि वोह कुछ कहता आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक नज़र डाली और उस की काया पलट दी। ह़ाकिम आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की नज़रे जलालत की ताब न ला सका और बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़ा। ख़ादिमों ने मुंह पर पानी के छींटे मारे, जूं ही होश आया फ़ौरन आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के क़दमो में गिर कर बद मज़्हबिय्यत और गुनाहों से ताइब हो गया और आप के

दस्ते मुबारक पर बैअ़त हो गया। पीरो मुर्शिद ह़ज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इन्फ़िरादी कोशिश से उस ने ज़ुल्मो जोर से जम्अ़ की हुई सारी दौलत अस्ल मालिकों को लौटा दी और आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सोह़बत को लाज़िम पकड़ लिया। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कुछ ही अ़र्से में उसे फ़ुयूज़े बाति़नी से मालामाल कर के ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई और वहां से रुख़्सत हो गए।[1]

दाता के मज़ार पर ख़्वाजा की ह़ाज़िरी

इसी सफ़र में आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रत दाता गन्ज बख़्श सय्यिद अ़ली हिजवेरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی के मज़ारे अक़्दस पर न सिर्फ़ ह़ाज़िरी दी बल्कि मुराक़बा भी किया और ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गन्ज बख़्श رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ख़ुसूसी फ़ैज़ ह़ासिल किया।[2] मज़ारे पुर अन्वार से रुख़्सत होते वक़्त दाता गन्ज बख़्श رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की अ़ज़मतो फ़ैज़ान का बयान इस शे'र के ज़रीए किया :

گنج بخش فیضِ عالم مظہرِ نورِ خدا   ناقِصاں را پیرِ کامل کاملاں را راہنما

या'नी गन्ज बख़्श दाता अ़ली हिजवेरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی का फ़ैज़ सारे आ़लम पर जारी है और आप नूरे ख़ुदा के मज़्हर हैं आप का मक़ाम येह है कि राहे त़रीक़त में जो नाक़िस हैं उन के लिये पीरे कामिल और जो

1... अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 511, मुलख़्ख़सन

2... मिरआतुल असरार, स. 598, मुलख़्ख़सन

ख़ुद पीरे कामिल हैं उन के लिये भी रहनुमा हैं।

तिलावते कुरआन और शब बेदारी

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَةُاللهِ تعالٰی علیہ का मा'मूल था कि सारी सारी रात इबादते इलाही में मसरूफ़ रहते हत्ता कि इशा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अदा करते और तिलावते कुरआन से इस क़दर शग़फ़ था कि दिन में दो कुरआने पाक ख़त्म फ़रमा लेते, दौराने सफ़र भी कुरआने पाक की तिलावत जारी रहती।[1]

पेट का कुफ़्ले मदीना

दीगर बुज़ुर्गाने दीन और औलियाए कामिलीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِمۡ اَجۡمَعِیۡن की त़रह़ आप رَحۡمَةُاللهِ تعالٰی علیہ भी ज़ियादा से ज़ियादा इबादते इलाही बजा लाने की ख़ातिर बहुत ही कम खाना तनावुल फ़रमाते ता कि खाने की कसरत की वज्ह से सुस्ती, नींद या ग़ुनूदगी इबादत में रुकावट का बाइस न बने, चुनान्चे आप के बारे में मन्क़ूल है कि सात रोज़ बा'द दो ढाई तोला वज़्न के बराबर रोटी पानी में भिगो कर खाया करते। [2]

लिबास मुबारक और सादगी

अल्लाह वालों की शान है कि वोह ज़ाहिरी ज़ैबो आराइश के बजाए बात़िन की सफ़ाई पर ज़ोर देते हैं। ह़ज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

1... मिरआतुल असरार, स. 595, ब तग़य्युर
2... मिरआतुल असरार, स. 595, ब तग़य्युर

رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ के लिबास मुबारक में भी इन्तिहा दरजे की सादगी नज़र आती थी आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ का लिबास सिर्फ़ दो चादरों पर मुश्तमिल होता और उस में भी कई कई पैवन्द लगे होते गोया लिबास से भी सुन्नते मुस्त़फ़ा से बे पनाह मह़ब्बत की झलक दिखाई देती थी नीज़ पैवन्द लगाने में भी इस क़दर सादगी इख़्तियार करते कि जिस रंग का कपड़ा मुय्यसर होता उसी को शरफ़ बख़्श देते ।(1)

पड़ोसियों से हुस्ने सुलूक

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ अपने पड़ोसियों का बहुत ख़याल रखा करते, उन की ख़बर गीरी फ़रमाते, अगर किसी पड़ोसी का इन्तिक़ाल हो जाता तो उस के जनाज़े के साथ ज़रूर तशरीफ़ ले जाते, उस की तदफ़ीन के बा'द जब लोग वापस हो जाते तो आप तन्हा उस की क़ब्र के पास तशरीफ़ फ़रमा हो कर उस के ह़क़ में मग़्फ़िरत व नजात की दुआ़ फ़रमाते नीज़ उस के अहले ख़ाना को सब्र की तल्क़ीन करते और उन्हें तसल्ली दिया करते । आप के ह़िल्म व बुर्दबारी जूदो सख़ावत और दीगर अख़्लाक़े आ़लिया से मुतअस्सिर हो कर लोग उ़म्दा अख़्लाक़ के ह़ामिल और पाकीज़ा सिफ़ात के पैकर हुए और देहली से अजमेर तक के सफ़र के दौरान तक़रीबन नव्वे लाख अफ़राद मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए । (2)

1... मिरआतुल असरार, स. 595, मुलख़्ख़सन
2... मुईनुल अरवाह़, स. 188 ब तग़य्युर

अफ़्वो बुर्दबारी

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बहुत ही नर्म दिल और मुतह़म्मिल मिज़ाज सन्जीदा त़बीअ़त के मालिक थे। अगर कभी गुस्सा आता तो सिर्फ़ दीनी गै़रतो ह़मिय्यत की बुन्याद पर आता अलबत्ता ज़ाती तौ़र पर अगर कोई सख़्त बात कह भी देता तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बरहम न होते बल्कि उस वक़्त भी ह़ुस्ने अख़्लाक़ और ख़न्दा पेशानी का मुज़ाहरा करते हुए सब्र का दामन हाथ से न जाने देते और ऐसा मा'लूम होता कि आप ने उस की ना ज़ैबा बातें सुनी ही न हों।[(1)]

ख़ौफ़े ख़ुदा

ह़ज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर ख़ौफ़े ख़ुदा इस क़दर ग़ालिब था कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हमेशा ख़शिय्यते इलाही से कांपते और गिर्या व ज़ारी करते, ख़ल्के ख़ुदा को ख़ौफ़े ख़ुदा की तल्क़ीन करते हुए इर्शाद फ़रमाया करते : ऐ लोगो ! अगर तुम ज़ेरे ख़ाक सोए हुए लोगों का ह़ाल जान लो तो मारे ख़ौफ़ के खड़े खड़े पिघल जाओ।[(2)]

पर्दा पोशी

ह़ज़रत ख़्वाजा क़ुत्बुद्दीन बख़्तयार काकी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की सिफ़ाते मोमिनाना बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि मैं कई बरस तक ख़्वाजा

1... ह़ज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ह़यात व ता'लीमात, स. 39, ब तग़य्युर
2... मुईनुल अरवाह़, स. 185 मुलख़्ख़सन

ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیۡہ की ख़िदमते अक्दस में ह़ाज़िर रहा लेकिन कभी आप رَحۡمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیۡہ की ज़बाने अक्दस से किसी का राज़ फ़ाश होते नहीं देखा, आप رَحۡمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیۡہ कभी किसी मुसल्मान का भेद न खोलते ।(1)

मुर्शिदे कामिल के मज़ारे मुबारक की ता'ज़ीम

एक मर्तबा ह़ज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन ह़सन चिश्ती عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی अपने मुरीदीन की तरबिय्यत फ़रमा रहे थे । दौराने बयान जब जब आप की नज़र दाईं त़रफ़ पड़ती तो बा अदब खड़े हो जाते । तमाम मुरीदीन येह देख कर हैरान थे कि पीरो मुर्शिद बार बार क्यूं खड़े हो रहे हैं, मगर किसी को पूछने की जुरअत न हो सकी अल ग़रज़ जब सब लोग वहां से चले गए, तो एक मन्ज़ूरे नज़र मुरीद अर्ज़ गुज़ार हुवा : हुज़ूर हमारी तरबिय्यत के दौरान आप ने बारहा क़ियाम फ़रमाया इस में क्या हिक्मत थी ? ह़ज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمُبِیۡن ने फ़रमाया : उस त़रफ़ पीरो मुर्शिद शैख़ उ़स्मान हारवनी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی का मज़ारे मुबारक है जब भी उस जानिब रुख़ होता तो मैं ता'ज़ीम के लिये उठ जाता, पस मैं अपने पीरो मुर्शिद के रौज़ए मुबारक की ता'ज़ीम में क़ियाम करता था ।(2)

फ़रमाने ग़ौसे आ'ज़म पर सर झुका दिया

जिस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہُ ने

1... ह़ज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ह़यात व ता'लीमात, स. 41, मुलख़्ख़सन
2... आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 114 ब तग़य्युर

बग़दादे मुक़द्दस में इर्शाद फ़रमाया : قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ كُلِّ وَلِیِّ الله या'नी मेरा येह क़दम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हर वली की गरदन पर है। तो उस वक़्त ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सय्यिदुना मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى अपनी जवानी के दिनों में मुल्के ख़ुरासान में वाक़ेअ़ एक पहाड़ी के दामन में इ़बादत किया करते थे, जब आप ने येह फ़रमाने आ़ली सुना तो अपना सर झुका लिया और फ़रमाया : "بَلْ قَدَمَاكَ عَلٰی رَأْسِیْ وَعَیْنَیَّ" बल्कि आप के क़दम मेरे सर और आंखों पर हैं।[1]

मुरीदों की फ़िक्र

एक बार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मक्कए मुकर्रमा की नूरबार फ़ज़ाओं में मुराक़बा कर रहे थे कि हातिफ़े ग़ैब से आवाज़ आई : मांग क्या मांगता है ? हम तुझ से बहुत ख़ुश हैं, जो त़लब करेगा पाएगा। अ़र्ज़ की : या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मेरे तमाम मुरीदों को बख़्श दे। जवाब आया : बख़्श दिया। अ़र्ज़ की : मौला ! जब तक मेरे तमाम मुरीद जन्नत में न चले जाएं मैं जन्नत में क़दम न रखूंगा।[2]

सुल्त़ानुल हिन्द ह़ज़रत सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपनी ज़िन्दगी के तक़रीबन 81 बरस राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने और मख़्लूक़ को राहे रास्त पर लाने केलिये

1... ग़ौसे पाक के ह़ालात, स. 67

2... तज़्किरए औलियाए बर्रे सग़ीर हिन्दो पाक स. 32

बसर कर दिये बल्कि कई किताबें भी तह़रीर फ़रमाईं उन में से चन्द किताबों के नाम येह हैं।

आप की तसानीफ़

1. अनीसुल अरवाह़ (पीरो मुर्शिद ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी के मल्फ़ूज़ात)
2. कश्फुल असरार (तसव्वुफ़ के मदनी फूलों का गुलदस्ता)
3. गन्जुल असरार (सुल्ता़न शम्सुद्दीन अल्तमश की ता'लीमो तल्क़ीन के लिये लिखी)
4. रिसालए आफ़ाक़ व अन्फुस (तसव्वुफ़ के निकात पर मुश्तमिल)
5. रिसालए तसव्वुफ़ मन्ज़ूम
6. ह़दीसुल मआ़रिफ़
7. रिसालए मौजूदिया(1)

मल्फ़ूज़ात

सुल्ता़नुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में अ़क़ीदत मन्दों और मुरीदों का हर वक़्त हुजूम रहता जिन की ज़ाहिरी व बाति़नी इस्लाह़ के लिये मल्फ़ूज़ात का सिल्सिला जारी व सारी रहता। ज़बाने ह़क़ तरजुमान से जो अल्फ़ाज़ निकलते उसे आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़लीफ़ए अक्बर व सज्जादा नशीन ह़ज़रत ख़्वाजा क़ुत्बुद्दीन बख़्तयार काकी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़ौरन लिख लिया करते। यूं ह़ज़रत ख़्वाजा क़ुत्बुद्दीन बख़्तयार काकी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने अपने पीरो

1... मुईनुल हिन्द ह़ज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, स. 103 ता 106 मुल्तक़ित़न

मुर्शिद के मल्फ़ूज़ात पर मुश्तमिल एक किताब तरतीब दी जिस का नाम ''दलीलुल आ़रिफ़ीन'' रखा । इस गुलशने अजमेरी से चन्द महक्ते फूल मुलाह़ज़ा कीजिये ।

1. जो बन्दा रात को बा त़हारत सोता है, तो फ़िरिश्ते गवाह रहते हैं और सुब्ह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ करते हैं ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इसे बख़्श दे येह बा त़हारत सोया था ।[1]
2. नमाज़ एक राज़ की बात है जो बन्दा अपने परवर दगार से कहता है, चुनान्चे ह़दीसे पाक में आया है । اِنَّ الْمُصَلِّیْ یُنَاجِیْ رَبَّہٗ[2] या'नी नमाज़ पढ़ने वाला अपने परवर दगार से राज़ की बात कहता है ।[3]
3. जो शख़्स झूटी क़सम खाता है वोह अपने घर को वीरान करता है और उस के घर से ख़ैरो बरकत उठ जाती है ।[4]
4. मुसीबत ज़दा लोगों की फ़रियाद सुनना और उन का साथ देना, ह़ाजत मन्दों की ह़ाजत रवाई करना, भूकों को खाना खिलाना, असीरों को क़ैद से छुड़ाना येह बातें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बड़ा मर्तबा रखती हैं ।[5]
5. नेकों की सोह़बत नेक काम से बेहतर और बुरे लोगों की सोह़बत बदी करने से भी बदतर है ।

1... हिश्त बिहिश्त, स. 77

2... کنز العمال، کتاب الصلوۃ، ۴/۱۷۹، حدیث: ۱۹۶۷۰، الجزء الثانی

3... हिश्त बिहिश्त, स. 75

4... हिश्त बिहिश्त, स. 84

5... मुईनुल हिन्द ह़ज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, स. 124

6. बद बख़्ती की अ़लामत येह है कि इन्सान गुनाह करने के बा वुजूद भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ख़ुद को मक़्बूल समझे ।
7. ख़ुदा का दोस्त वोह है जिस में येह तीन ख़ूबियां हों : सख़ावत दरिया जैसी, शफ़्क़त आफ़्ताब की त़रह़ और तवाज़ोअ़ ज़मीन की मानिन्द ।(1)

सज्जादा नशीन व ख़ुलफ़ा

हुज़ूर सय्यिदी ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के ख़ुलफ़ा में सब से क़रीबी और मह़बूब ह़ज़रत सय्यिदुना क़ुत़्बुद्दीन बख़्तयार काकी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْکَافِی थे । ख़्वाजा साहिब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के विसाले ज़ाहिरी के बा'द आप ही सज्जादा नशीन हुए ।(2) इन के इ़लावा दीगर जलीलुल क़द्र ख़ुलफ़ा में ह़ज़रत क़ाज़ी ह़मीदुद्दीन नागोरी, सुल्त़ानुत्तारिकीन ह़ज़रत शैख़ ह़मीदुद्दीन सूफ़ी और ह़ज़रत शैख़ अ़ब्दुल्लाह बयाबानी (साबिक़ा अजय पाल जोगी) رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن का शुमार होता है ।(3)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब बन्दे अपनी तमाम तर ज़िन्दगी उस के अह़काम की बजा आवरी और उस के ज़िक्र में बसर करते हैं, दुन्यवी लज़्ज़तों और आसाइशों को छोड़ कर तब्लीग़ व इशाअ़ते दीन में गुज़ार देते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें

1... ख़ौफ़नाक जादूगर, स. 25
2... मुईनुल हिन्द ह़ज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, स. 95
3... इक़्तिबासुल अन्वार, स. 388

बतौ़रे इन्आ़म आख़िरत में तो बुलन्दो बाला दरजात और बे शुमार ने'मतों से सरफ़राज़ फ़रमाता ही है लेकिन दुन्या में भी इन के मक़ामो मर्तबे को लोगों पर ज़ाहिर करने के लिये कुछ ख़साइसो करामात अ़ता फ़रमाता है। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बे शुमार करामात से नवाज़ रखा था आइये ! उन में से चन्द करामात पढ़िये और अपने दिलों में औलियाए किराम की महब्बत को जगाइये !

﴾1﴿ मुर्दा ज़िन्दा कर दिया

एक बार अजमेर शरीफ़ के ह़ाकिम ने किसी शख़्स को बे गुनाह सूली पर चढ़ा दिया और उस की मां को कहला भेजा कि अपने बेटे की लाश ले जाए। दुख्यारी मां ग़म से निढाल हो कर रोती हुई ह़ज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हुई और फ़रियाद करने लगी : आह ! मेरा सहारा छिन गया, मेरा घर उजड़ गया, मेरा एक ही बेटा था ह़ाकिम ने उसे बे क़ुसूर सूली पर चढ़ा दिया। येह सुन कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जलाल में आ गए और फ़रमाया : मुझे उस की लाश के पास ले चलो। जूं ही आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه लाश के क़रीब पहुंचे तो इशारा कर के फ़रमाया : ऐ मक़्तूल ! अगर ह़ाकिमे वक़्त ने तुझे बे क़ुसूर सूली दी है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से उठ खड़ा हो। लाश में फ़ौरन ह़रकत पैदा हुई और देखते ही देखते वोह शख़्स ज़िन्दा हो कर खड़ा हो गया।[1]

1...ख़ौफ़नाक जादूगर, स. 16, ब तग़य्युर

﴾2﴿ अ़ज़ाबे क़ब्र से रिहाई

ह़ज़रते सय्यिदुना बख़्तयार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने एक मुरीद के जनाज़े में तशरीफ़ ले गए, नमाज़े जनाज़ा पढ़ा कर अपने दस्ते मुबारक से क़ब्र में उतारा। तदफ़ीन के बा'द एक एक कर के सब लोग चले गए हुज़ूर ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه क़ब्र के पास तशरीफ़ फ़रमा रहे। अचानक आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ग़मगीन हो गए। कुछ देर के बा'द आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़बान पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ जारी हुवा और आप मुत़्मइन हो गए। मेरे इस्तिफ़्सार पर फ़रमाया : उस के पास अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आ गए थे जिस से मैं परेशान हो गया इतने में मेरे मुर्शिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی तशरीफ़ लाए और फ़िरिश्तों से कहा : येह बन्दा मेरे मुरीद मुईनुद्दीन का मुरीद है, इस को छोड़ दो, फ़िरिश्तों ने कहा : येह बहुत ही गुनहगार शख़्स था। यकायक ग़ैब से आवाज़ आई : ऐ फ़िरिश्तों ! हम ने उ़स्मान हारवनी के सदक़े मुईनुद्दीन चिश्ती के मुरीद को बख़्श दिया।[1]

﴾3﴿ छागल में तालाब

हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के चन्द मुरीद एक बार अजमेर शरीफ़ के मश्हूर तालाब अना सागर पर ग़ुस्ल करने गए तो काफ़िरों ने शोर मचा दिया कि येह मुसल्मान हमारे तालाब को

1...ख़ौफ़नाक जादूगर, स. 8

''नापाक'' कर रहे हैं । चुनान्चे वोह ह़ज़रात लौटे और सारा माजरा ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالیٰ علیہ की ख़िदमत में अ़र्ज़ कर दिया । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالیٰ عَلَیْہ ने एक ख़ादिम को छागल (पानी रखने का मिट्टी का बरतन) देते हुए इर्शाद फ़रमाया : इस में तालाब का पानी भर लाओ । ख़ादिम ने जूं ही पानी भरने के लिये छागल तालाब में डाला तो उस का सारा पानी छागल में आ गया । लोग पानी न मिलने पर बे क़रार हो गए और आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالیٰ عَلَیْہ की ख़िदमते सरापा करामत में ह़ाज़िर हो कर फ़रियाद करने लगे चुनान्चे आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالیٰ عَلَیْہ ने ख़ादिम को हुक्म दिया कि जाओ और पानी वापस तालाब में उंडेल दो । ख़ादिम ने हुक्म की ता'मील की तो अना सागर फिर पानी से लबरेज़ हो गया ।(1)

4 अल्लाह वालों का तसर्रुफ़

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالیٰ عَلَیْہ का एक मुरीद राजा के हां मुलाज़िम था । राजा को जब अपने उस मुलाज़िम की इस्लाम लाने की ख़बर हुई तो उस पर ज़ुल्म करने लगा । हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالیٰ عَلَیْہ को पता चला तो आप ने राजा को ज़ुल्म से बाज़ रहने का हुक्म भेजा लेकिन वोह ज़ालिमो जाबिर शख़्स इक़्तिदार के नशे में मस्त था कहने लगा : येह कौन आदमी है जो यहां बैठ हम पर हुक्म चला रहा है ? आप رَحْمَۃُاللّٰہ تعالیٰ علیہ को ख़बर पहुंची तो फ़रमाया : हम ने उसे गरिफ़्तार कर के लश्करे इस्लाम के ह़वाले कर दिया । अभी चन्द ही दिन गुज़रे

1...ख़ौफ़नाक जादूगर, स. 7

थे कि सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन मुहम्मद ग़ौरी ने उस शहर पर हम्ला कर दिया। राजा अपनी फ़ौज के हमराह मुक़ाबला करने आया मगर लश्करे इस्लाम की जुरअत व बहादुरी के आगे ज़ियादा देर न ठहर सका बिल आख़िर हथियार डाल कर इब्रतनाक शिकस्त से दो चार हुवा और सिपाहियों ने उसे ज़िन्दा गरिफ़्तार कर के इन्तिहाई ज़िल्लत के साथ सुल्तान ग़ौरी के सामने पेश कर दिया।(1)

《5》 हर रात तवाफ़े का'बा

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का कोई मुरीद या अहले महब्बत अगर हज या उम्रे की सआदत पाता और तवाफ़े का'बा के लिये हाज़िर होता तो देखता कि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه तवाफ़े का'बा में मश्ग़ूल हैं, उधर अहले ख़ाना और दीगर अहबाब येह समझते कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने हुजरे में मौजूद हैं। बिल आख़िर एक दिन येह राज़ खुल ही गया कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه **बैतुल्लाह** शरीफ़ हाज़िर हो कर सारी रात तवाफ़े का'बा में मश्ग़ूल रहते हैं और सुब्ह अजमेर शरीफ़ वापस आ कर बा जमाअत नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाते हैं।(2)

《6》 अनोखा ख़ज़ाना

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के आस्तानए मुबारक पर रोज़ाना इस क़दर लंगर का एहतिमाम होता कि शहर भर से ग़ुरबा व मसाकीन आते और सैर हो कर खाते।

1... इक़्तिबासुल अन्वार, स. 368 2... इक़्तिबासुल अन्वार, स. 373

ख़ादिम जब अख़राजात के लिये आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में दस्त बस्ता अ़र्ज़ करता तो आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुसल्ले का कनारा उठा देते जिस के नीचे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रह़मत से ख़ज़ाना ही ख़ज़ाना नज़र आता। चुनान्चे ख़ादिम आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हुक्म से ह़स्बे ज़रूरत ले लेता।(1)

विसाले पुर मलाल

आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के विसाल की शब बा'ज़ बुज़ुर्गों ने ख़्वाब में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : मेरे दीन का मुईन ह़सन सन्जरी आ रहा है मैं अपने मुईनुद्दीन के इस्तिक़्बाल के लिये आया हूं। चुनान्चे 6 रजबुल मुरज्जब 633 हि. ब मुत़ाबिक़ 16 मार्च 1236 ई. बरोज़ पीर फ़ज्र के वक़्त मुह़िब्बीन इन्तिज़ार में थे कि पीरो मुर्शिद आ कर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाएंगे मगर अफ़्सोस ! उन का इन्तिज़ार करना बे सूद रहा। काफ़ी देर गुज़र जाने के बा'द जब ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हुजरे शरीफ़ का दरवाज़ा खोल कर देखा गया तो ग़म का समुन्दर उमंड आया, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजए ख़्वाजगान सुल्त़ानुल हिन्द मुईनुद्दीन ह़सन चिश्ती अजमेरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی विसाल फ़रमा चुके थे। और देखने वालों ने येह ह़ैरत अंगेज़ व रूह़ानी मन्ज़र अपनी आंखों से देखा कि आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की नूरानी पेशानी पर येह इ़बारत नक़्श थी حَبِیْبُ اللہِ مَاتَ فِیْ حُبِّ اللہِ: (या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का मह़बूब बन्दा मह़ब्बते

1... इक़्तिबासुल अन्वार, स. 376

इलाही में विसाल कर गया) ।[1]

मज़ार शरीफ़ और उ़र्से मुबारक

सुल्त़ानुल हिन्द ख़्वाजा मुईनुद्दीन ह़सन चिश्ती अजमेरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का मज़ारे अक़्दस हिन्द के मश्हूर शह्र अजमेर शरीफ़ (सूबा राजस्थान शिमाली हिन्द) में है । जहां हर साल आप का उ़र्स मुबारक 6 रजबुल मुरज्जब को निहायत तुज़्को एह़तिशाम के साथ मनाया जाता है और इसी तारीख़ की निस्बत से उ़र्स मुबारक को "छटी शरीफ़" भी कहा जाता है इस उ़र्स में मुल्क व बैरूने मुल्क से हज़ारों अफ़राद बड़े जोशो जज़्बे से शिर्कत कर के ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ से अपनी अ़क़ीदत का इज़्हार करते हैं ।

ख़्वाजा के सदक़े सिह़्ह़त याबी

आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُالرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ह़ज़रत ख़्वाजा (ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ) के मज़ार से बहुत कुछ फ़ुयूज़ो बरकात ह़ासिल होते हैं, मौलाना बरकात अह़मद साह़िब मर्ह़ूम जो मेरे पीर भाई और मेरे वालिदे माजिद رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ के शागिर्द थे उन्हों ने मुझ से बयान किया कि मैं ने अपनी आंखों से देखा कि एक ग़ैर मुस्लिम जिस के सर से पैर तक फोड़े थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है कि किस क़दर थे, ठीक दोपहर को आता और दरगाह शरीफ़ के सामने गर्म कंकरों

1... अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 521, मुलख़्ख़सन वग़ैरा

और पथ्थरों पर लौटता और कहता "ख़्वाजा अगन (या'नी ऐ ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जलन) लगी है"। तीसरे रोज़ मैं ने देखा कि बिल्कुल अच्छा हो गया है।(1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मजलिसे मज़ाराते औलिया

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी दुन्या भर में नेकी की दा'वत आ़म करने, सुन्नतों की ख़ुश्बू फै़लाने, इ़ल्मे दीन की शम्एं जलाने और लोगों के दिलों में **औलियाउल्लाह** की मह़ब्बतो अ़क़ीदत बढ़ाने में मसरूफ़ है। ता दमे तह़रीर इस का मदनी पैग़ाम पहुंच चुका है। मदनी काम को मुनज़्ज़म करने के लिये तक़रीबन 92 से ज़ियादा मजालिस क़ाइम हैं, इन्ही में से एक "मजलिसे मज़ाराते औलिया" भी है जो दीगर मदनी कामों के साथ साथ बुज़ुर्गाने दीन के मज़ाराते मुबारका पर ह़ाज़िर हो कर मुख़्तलिफ़ दीनी ख़िदमात सर अन्जाम देती है। मसलन ह़त्तल मक़्दूर साहिबे मज़ार के उ़र्स के मौक़अ़ पर इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त का इन्इ़क़ाद करती है, मज़ारात से मुल्ह़िक़ा मसाजिद में आ़शिक़ाने रसूल के मदनी

1... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 384

क़ाफ़िले सफ़र करवाती और बिल ख़ुसूस उ़र्स के दिनों में मज़ार शरीफ़ के इह़ाते़ में सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़े लगाती है जिन में वुज़ू, ग़ुस्ल, तयम्मुम, नमाज़ और ईसाले सवाब का त़रीक़ा, मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब और सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतें सिखाई जाती हैं नीज़ दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की तरग़ीब भी दिलाई जाती है, अय्यामें उ़र्स में साह़िबे मज़ार की ख़िदमत में ढेरों ढेर ईसाले सवाब के तह़ाइफ़ पेश करती है नीज़ साह़िबे मज़ार बुज़ुर्ग के सज्जादा नशीन, ख़ुलफ़ा और मज़ारात के मुतवल्ली साह़िबान से वक़्तन फ़ वक़्तन मुलाक़ात कर के इन्हें दा'वते इस्लामी की ख़िदमात, जामिआ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना में होने वाले मदनी कामों से आगाह करती है।

नेकी की दा'वत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप को मज़ार शरीफ़ पर आना मुबारक हो, ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़ों का सिल्सिला जारी है, यक़ीनन ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है, हम

लम्ह़ा ब लम्ह़ा मौत की त़रफ़ बढ़ते चले जा रहे हैं, अ़न्क़रीब हमें अंधेरी क़ब्र में उतरना और अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा, इन अनमोल लम्ह़ात को ग़नीमत जानिये और आइये ! अह़कामे इलाही पर अ़मल का जज़्बा पाने, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों और **अल्लाह** के नेक बन्दों के मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब सीखने सिखाने के लिये मदनी ह़ल्क़ों में शामिल हो जाइये। **अल्लाह** तआ़ला हम सब को दोनों जहां की भलाइयों से मालामाल फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मदनी फूल

(**वलिय्युल्लाह** के मज़ार शरीफ़ या) किसी भी मुसल्मान की क़ब्र की ज़ियारत को जाना चाहे तो मुस्तह़ब येह है कि पहले अपने मकान पर (ग़ैर मक्रूह वक़्त में) दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े, हर रक्अ़त में **सूरतुल फ़ातिह़ा** के बा'द एक बार **आयतुल कुर्सी** और तीन बार **सूरतुल इख़्लास** पढ़े और इस का सवाब साह़िबे क़ब्र को पहुंचाए, **अल्लाह** तआ़ला उस फ़ौत शुदा बन्दे की क़ब्र में नूर पैदा करेगा और इस (सवाब पहुंचाने वाले) शख़्स को बहुत ज़ियादा सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा।

(फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 5, स. 350)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	ख़ौफ़े ख़ुदा	15
विलादते बा सआ़दत	2	पर्दा पोशी	15
नाम व सिल्सिलए नसब	3	मुर्शिदे कामिल के मज़ार की ता'ज़ीम	16
वालिदैने करीमैन	3	फ़रमाने ग़ौसे आ'ज़म पर सर झुका दिया	16
वलिय्युल्लाह के जूठे की बरकत	4	मुरीदों की फ़िक्र	17
हुसूले इ़ल्म के लिये सफ़र	6	आप की तसानीफ़	18
त़ालिब मत़लूब के दर पर	7	मल्फ़ूज़ात	18
यक दर गीर मोह़्कम गीर	7	सज्जादा नशीन व ख़ुलफ़ा	20
मुरीद हो तो ऐसा	8	﴾1﴿ मुर्दा ज़िन्दा कर दिया	21
बारगाहे इलाही में मक़्बूलिय्यत	8	﴾2﴿ अ़ज़ाबे क़ब्र से रिहाई	22
बारगाहे रिसालत से हिन्द की सुल्त़ानी	9	﴾3﴿ छागल में तालाब	22
सुल्त़ानुल हिन्द का सफ़रे हिन्द	10	﴾4﴿ अल्लाह वालों का तसर्रुफ़	23
हमअ़स्र उ़लमा व औलिया से मुलाक़ात	10	﴾5﴿ हर रात त़वाफ़े का'बा	24
ह़ाकिमे सब्ज़वार की तौबा	11	﴾6﴿ अनोखा ख़ज़ाना	24
दाता के मज़ार पर ख़्वाजा की ह़ाज़िरी	12	विसाले पुर मलाल	25
तिलावते क़ुरआन और शब बेदारी	13	मज़ार शरीफ़ और उ़र्स मुबारक	26
पेट का क़ुफ़्ले मदीना	13	ख़्वाजा के सदक़े सिह़्ह़त याबी	26
लिबास मुबारक और सादगी	13	मजलिसे मज़ाराते औलिया	27
पड़ोसियों से ह़ुस्ने सुलूक	14	नेकी की दा'वत	28
अ़फ़्वो बुर्दबारी	15	मआख़िज़ो मराजेअ़	31

ماخذومراجع

نمبر شمار	کتاب	مطبوعہ
1	سنن الترمذی	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
2	سنن ابی داود	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
3	شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
4	کنزالعمال	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹
5	مراٰۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلیکشنز
6	اقتباس الانوار	الفیصل ناشران وتاجران کتب
7	مراٰۃ الاسرار	الفیصل ناشران وتاجران کتب
8	معین الارواح	
9	تذکرہ اولیائے برصغیر	ملک اینڈ کمپنی
10	معین الہند حضرت خواجہ معین الدین اجمیری	زاویہ پبلشرز
11	حضرت خواجہ غریب نواز حیات وتعلیمات	ابوالحسنات اسلامک ریسرچ سینٹر حیدرآباد دکن الہند
12	ہشت بہشت	پروگریسو بکس
13	اللہ کے خاص بندے عبدہ	علم دین پبلشرز
14	آدابِ مرشد کامل	مکتبۃ المدینہ
15	غوثِ پاک کے حالات	مکتبۃ المدینہ
16	خوفناک جادوگر	مکتبۃ المدینہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना जाएज़ा लेते हुए नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ'' अपनी इस्लाह़ के लिये **''नेक आ'माल''** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **''मदनी क़ाफ़िलों''** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ